53

आप विशेष हैं!

(12:3-8)

कल्पना करें कि आपके सामने मेज पर एक कागज़ पड़ा है। पृष्ठ में ऊपर ये निर्देश दिए गए हैं: ''उन बातों के सामने जो किसी व्यक्ति को विशेष बनाती हैं टिक लगाएं।'' नीचे एक सूची दी गई है[1] जिसमें इन खूबियों को शामिल किया गया है:

सुन्दर या स्मार्ट होना।
बहुत सा धन और बहुत सी सम्पत्ति होना।
प्रसिद्ध होना; हर किसी के चहेते होना।
दूसरों पर शक्ति और अधिकार होना।
प्रसिद्ध मनोरंजक या राजनैतिक व्यक्तित्व होना।
समाचार पत्रों या पत्रिकाओं में आपकी तस्वीर छपना।

सूची में नीचे, बिल्कुल नीचे यह लिखा है:

परमेश्वर का बालक होना

आप इनमें से किन बातों पर टिक लगाएंगे? फिर सांसारिक सोच वाले व्यक्ति पर विचार करें जिसे लगता है कि कोई बात किसी को ''विशेष'' बनाती है। पिछले पाठ में हमने देखा था कि यदि हम सर्तक नहीं हैं, तो हम बिना अहसास किए संसार के मूल्य प्रबन्धन को स्वीकार कर सकते हैं। पौलुस ने हमें मन को ''नया बनाने'' (रोमियों 12:2) अर्थात सब कुछ नये ढंग से देखने की चनौती दी।

इस वचन पाठ में पौलुस ने कहा कि यदि आप परमेश्वर की संतान हैं, तो आप *विशेष* हैं। पौलुस यह दिखाने के लिए कि आप विशेष हैं कई प्रमाण दे सकता था। वह इस तथ्य पर बात कर सकता था कि परमेश्वर ने आपको बनाया है और आप सबसे अलग हैं। ''सृष्टि की कोई नकल नहीं है।''[2] वह यह ज़ोर दे सकता था कि आप इतने विशेष हैं कि मसीह आपके लिए क्रूस पर मर गया। आप पौलुस के साथ कह सकते हैं, ''परमेश्वर के पुत्र ने *मुझ* से प्रेम किया, और *मेरे* लिए अपने आप को दे दिया'' (गलातियों 2:20)। परन्तु जो प्रमाण हम पौलुस के शब्दों से लेंगे वह यह है कि आप विशेष हैं क्योंकि परमेश्वर ने आपके लिए कम से कम एक विशेष दान दिया है जो प्रभु की कलीसिया को चलाने के लिए आवश्यक है।

परमेश्वर ने आपको एक विशेष दान दिया है ... (12:3-6ख)

निर्देश (आयत 3)

पौलुस ने आरम्भ किया, ''क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूं, कि जैसा समझना चाहिए, उस से बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे'' (आयत 3)। ''अनुग्रह जो मुझ को मिला है'' वाक्यांश पौलुस की प्रेरिताई का संकेत है जो उसे परमेश्वर के अनुग्रह से दी गई थी (देखें रोमियों 1:5; 15:15, 16; गलातियों 2:7-9)। पौलुस इस बात को समझता था कि वह किसी व्यक्तिगत खूबी के कारण प्रेरित नहीं था, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह के कारण था।

(1) *बहुत बढ़कर नहीं।* अनुग्रह के द्वारा प्रेरित के रूप में, पौलुस ने हर पाठक से आग्रह किया ''जैसा समझना चाहिए, उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिलाया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे'' (रोमियों 12:3ख)। पौलुस ने शब्दों का खेल खेला जो हिन्दी में स्पष्ट नहीं है। ''समझे'' (*phroneo*) के लिए शब्द के रूप अभी दिए गए हवाले के भाग में चार बार मिलते हैं। *Phroneo* का इस्तेमाल दो बार हुआ है। इसके अलावा पौलुस ने *huperphroneo* (*phroneo* से पहले *huper* [''ऊपर'' या ''ऊंचा'']) का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''उससे बढ़कर अपने आपको समझना'' अंत में उसने *sophroneo* (*phroneo* से पहले *sozo* [''बचाना'']) का इस्तेमाल किया जिसका अर्थ है ''सबुद्धि के साथ,'' अर्थात ''मजबूत [स्वस्थ] मन'' होना।[3] वचन के इस भाग का अनुवाद ''[अपने बारे में] ऊंचे विचार न सोचो, बल्कि स्वास्थ्य विचार सोचो [अपने बारे में]'' है। CJB में है ''मैं तुम्हें ... बता रहा हूं कि अपने ही महत्व के बारे में बढ़ाचढ़ाकर विचार न रखो इसके बजाय अपने आपका एक गंभीर अनुमान विकसित करो। ...''

यदि परमेश्वर हमें सफलता देकर आशीषित करता है, तो हमें घमण्ड से भरने का खतरा झेलना पड़ता है। हम अपने दानों का इस्तेमाल करने में दूसरों से ''अधिक मेहनती'' होने के गर्व से भर सकते हैं। हमें अपने बारे में अधिक ऊंचा न सोचने के लिए ईश्वरीय सुरक्षा क्या सहायता कर सकती है? हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ''*परमेश्वर* ने हर एक को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है'' (आयत 3ग)। महिमा के योग्य केवल परमेश्वर है, हम नहीं।

''परिमाण के अनुसार विश्वास'' वाक्यांश कुछ अस्पष्ट है। ''परिमाण'' शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ ''मापने का साधन'' या ''मापा गया भाग'' हो सकता है।[4] कइयों का विचार है कि पौलुस के मन में पहले वाली परिभाषा अर्थात मानक था। परमेश्वर ने हमें विश्वास का मानक दिया है जिसके द्वारा हम अपने आपको माप सकते हैं। जब हम मापने के उस यन्त्र का इस्तेमाल करते हैं तो अपने साथ ईमानदार होने पर हमें पता चलता है कि हम में कितनी कमी है। फिर घमण्ड के लिए जगह नहीं रहेगी। परन्तु अधिकतर लोगों का मानना है कि दूसरी परिभाषा अर्थात भाग संदर्भ के साथ सही मेल खाती है। परमेश्वर ने हर मसीही को अपनी आशिषों पर एक विशेष भाव दिया है। यह आयत 6 से मेल खाता है: ''उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न बरदान मिले हैं।'' फिर विश्वास (*pistis*) शब्द मिलता है। यह शब्द इस पत्री में

प्रसिद्ध है, परन्तु स्पष्ट रूप से इसका इस्तेमाल यहां अलग ढंग से किया गया है। इस पद में ''विश्वास'' सुसमाचार को ग्रहण करने के हमारे व्यक्तिगत विश्वास की तरह नहीं है (रोमियो 1:16; 10:17) जितना परमेश्वर के अनुग्रह की अभिव्यक्ति के रूप में। परमेश्वर के दानों का इस्तेमाल विश्वास से होता है इसलिए हमें लग सकता है कि आयत 3 में ''विश्वास'' का अर्थ परमेश्वर का हमें अपने दानों का इस्तेमाल करने के लिए *जो भी* आवश्यक हो (वचन सहित) शामिल है। इसी प्रकार पतरस ने आत्मिक दानों की सूची देते हुए कहा, ''यदि कोई सेवा करे, तो *उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है*'' (1 पतरस 4:11क)।

''परिमाण के अनुसार विश्वास'' वाक्यांश के अर्थ से परेशान न हो। पौलुस के कहने का जो भी अर्थ हो, वह यह समझाना चाहता था कि *परमेश्वर* हमें यह इसलिए देता है, ताकि हमें अपने ऊपर घमण्ड करने का कारण न हो। शायद जितना कुछ राज्य के लिए पौलुस ने किया शायद किसी और ने नहीं किया; परन्तु उसने कहा ''जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं: और उसका अनुग्रह जो मुझ पर हुआ, वह व्यर्थ नहीं हुआ; परन्तु मैं ने उन सब से बढ़कर परिश्रम भी किया: तौभी यह मेरी ओर से नहीं हुआ परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से जो मुझ पर था'' (1 कुरिन्थियों 15:10क)।

(2) *बहुत नीचा नहीं।* आयत 3 में पौलुस का विशेष ध्यान मसीही लोगों का अपने आपको बहुत ऊंचा समझने का था। परन्तु ''सबुद्धि के साथ अपने [आप] को समझने'' की उसकी शिक्षा भी विपरीत चरम यानी मसीही व्यक्ति के अपने आपको *बहुत छोटा* समझने की निंदा करती है। किसी अंक को अपने आपको दूसरों से बेहतर नहीं समझना चाहिए, परन्तु किसी मसीही को अपने आपको बेकार भी नहीं समझना चाहिए। पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर ने *हर एक* को परिमाण के अनुसार विश्वास दिया है।'' प्रभु ने किसी को छोड़ा नहीं है; उसने अपने *सब* बच्चों को दान दिए हैं। हमें घमण्डी होने की बात से चौकस होना आवश्यक है परन्तु हमें झूठी दीनता से भी बचना चाहिए जो हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए दानों का इस्तेमाल करने से रोकती है।

उदाहरण (आयतें 4-6ख)

पौलुस ने अपने निर्देशों के बाद आम तौर पर इस्तेमाल किए जाने वाला एक उदाहरण दिया। 4 और 5 आयतों में उसने कलीसिया की तुलना मानवीय देह से की:

> जैसे हमारी एक [शारीरिक] देह में बहुत से अंग [हाथ, पांव आदि] हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं।[5] वैसा ही हम [मसीही लोग] जो बहुत हैं, मसीह में एक [आत्मिक] देह [कलीसिया; इफिसियों 1:22, 23] होकर आपस में एक दूसरे के [काम करने वाले] अंग हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 12:27; कुलुस्सियों 1:18, 24)।

इस रूपक से कई प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 12:12-27[6])। उदाहरण के लिए पौलुस ने स्पष्ट किया कि अपने उदाहरण का इस्तेमाल शरीर/कलीसिया के संदर्भ में करते हैं। ऐसा करने के लिए हमें स्थानीय मण्डली में सक्रिय होना आवश्यक है। मैं और कई प्रासंगिकताएं देता हूं जिनका हमारे वचन पाठ में सुझाव या संकेत दिया गया है। मेरे यह कहने के दौरान अपने मन में मानवीय देह की कल्पना करें।[7]

(1) *शरीर के हर एक अंग के पास एक या अधिक दान (काम) होते हैं; कोई ऐसा नहीं है जिसके पास न हो।* आयत 6 कहती है, ''उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न-भिन्न बरदान मिले हैं।'' ये दान क्या हैं? अधिकतर लोग परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए तोड़ों और गुणों की बात करते हैं, और पौलुस के मन में मुख्यतया यही बात हो सकती है। शायद हमें परमेश्वर द्वारा दिए गए तोड़ों और गुणों पर विचार करना चाहिए। वह हमें देता है *के साथ* उन दानों का इस्तेमाल करने के लिए जो भी हमें चाहिए।

(2) *सभी दान/काम एक जैसे नहीं हैं।* आयत 6 को फिर से देखें: ''उस अनुग्रह के साथ जो हमें दिया गया है, *हमें भिन्न-भिन्न* वरदान मिले हैं।'' आंख का काम कान के काम से भिन्न है; हाथ का काम वही नहीं है जो पांव का काम है।

बहुत से लेखक वचन के इस भाग का इस्तेमाल कलीसिया में विश्वासों की ''भिन्नता'' को समझने से ''दूसरे के विचारों'' को सहने की आवश्यकता के बारे में बात करने के अवसर के रूप में करते हैं। पौलुस विश्वासों की विभिन्नता की नहीं, बल्कि कामों की विभिन्नता की बात कर रहा था। 14 और 15 के अध्यायों में उसने ज़ोर दिया कि हमें विचार के मामलों में एक दूसरे की सहने वाले होना आवश्यक है, परन्तु विश्वास के मामलों में क्या होना चाहिए? क्या इस प्रेरित का विश्वास था कि गलत शिक्षा को सहने वाला होना चाहिए? 16:17 में उसने कहा, ''हे भाइयो, मैं तुम से बिनती करता हूं, कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है, फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो।''

आइए अपनी चर्चा में वापिस चलते हैं: कलीसिया के सभी सदस्यों को एक ही दान/काम नहीं मिला है। हम आंख से सुगने या कान से देखने की अपेक्षा नहीं करते; हम में से कई लोग अपने पांवों से चीजें नहीं उठा सकते या हाथों पर नहीं चल सकते। परन्तु कई बार हम कलीसिया के सभी सदस्यों से एक ही तरह से काम करने की उम्मीद करते हैं, ''कान'' सदस्य को इसलिए डांट सकते हैं क्योंकि वह ''देखने'' का काम सही नहीं करता। हमें कामों की विभिन्नता को समझने की आवश्यकता है।

(3) *हर दान/काम महत्वपूर्ण हैं।* शारीरिक देह के कई भागों पर दूसरों से अधिक ध्यान दिया जाता है, परन्तु देह की बेहतरी और काम करने के लिए सबकी आवश्यकता है। क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जिसमें अपनी शारीरिक देह से किसी अंग को काट डाला हो? क्या आपने बीमारी के बिस्तर पर किसी को देखा है जिसके शरीर के किसी भाग ने काम करना बंद कर दिया हो? तो आप समझते हैं कि मैं क्या कहना चाहता हूं।

जब मेरा परिवार आस्ट्रेलिया में रहता और काम करता था, तो मेरे भाई काय ने अमेरिका में एक स्कूल में एक वर्ष बिताया। उस साल मैंने मैक्वेरी स्कूल ऑफ़ प्रीचिंग का संचालन किया और प्रीचिंग पर कॉय की क्लास को पढ़ाया। छात्रों को दिए एक काम में विज़ुअल एड का इस्तेमाल करते हुए सरमन देना था। अधिकतर छात्रों ने चार्ट और अन्य सहायक सामग्री तैयार की, परन्तु डॉन मेस नामक एक छात्र बिना कुछ लिए क्लास में आ गया। जब बोलने की बारी आई तो उसने वचन पाठ के रूप में रोमियों 12 और 1 कुरिन्थियों 12 का इस्तेमाल करते हुए शारीरिक देह के अंगों पर बात की। उसने कहा, ''हर अंग का महत्व है।'' फिर उसने अपना हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, ''उदाहरण के लिए, मेरे हाथ की हर उंगली महत्वपूर्ण है। अंगूठा और बीच वाली उंगली

महत्वपूर्ण है; वे हमारे लिए चीज़ें उठाना सम्भव बनाती हैं। हम पहली उंगली का इस्तेमाल चीज़ों की ओर संकेत करने के लिए करते हैं। तीसरी उंगली में हम अंगूठी पहनते हैं।'' फिर उसने अपनी छोटी उंगली उठाई। ''परन्तु यह छोटी उंगली क्या करती है ? इसका क्या लाभ है ?'' एक पल के लिए रुककर उसने पूछा, ''क्या आपने कभी कान में खुजली की है ?'' उसने छोटी ऊंगली अपने कान में डाली, इसे इस तरह घुमाया जैसे वह कान के भीतर खुजा रही है। उसने राहत की सांस देने को दिखाते हुए कहा, ''हां, हर अंग का महत्व है !''

पौलुस ने यह कहते हुए आयत 5 खत्म की कि हम ''आपस में एक दूसरे के अंग हैं।'' AB में है ''एक दूसरे के अंग-[आपस में एक दूसरे पर निर्भर]।'' जिस प्रकार से मेरी शारीरिक देह के एक अंग को मेरी देह के अन्य सभी अंगों की आवश्यकता है, वैसे ही आत्मिक देह (कलीसिया) के एक अंग को देह के अन्य सभी अंगों की आवश्यकता है। कोई अंग अनावश्यक नहीं है; कोई दान अनावश्यक नहीं है।

(4) *हर दान इस्तेमाल किए जाने के लिए दिया गया है।* आयत 6 एक बार फिर पढ़ें: ''हमें ... बरदान मिले हैं, तो जिस को ... दान मिला हो, वह विश्वास के परिणाम के अनुसार'' उसका इस्तेमाल करे। इस पर हम आगे और बात करेंगे।

... सो इसका पता लगाएं ... (12:6ग-8)

अब तक आप सोच रहे होंगे कि यदि परमेश्वर ने मुझे दान दिया है तो वह क्या *है?* ''मुझे कैसे पता चल सकता है कि मेरे पास क्या दान है ?''

एक सूची

6 से 8 आयतों में पौलुस ने सात दानों की एक सूची दी: भविष्यवाणी करना, सेवा करना, सिखाना, उपदेश देना, दान देना और दया दिखाना। बाइबल की अधिकतर सूचियों की तरह यह भी सम्पूर्ण नहीं है। ''असाधारण'' (आश्चर्यकर्मों) तथा साधारण (आश्चर्यकर्म रहित) दोनों दानों की सूचियां 1 कुरिन्थियों 12:8-10, 28; इफिसियों 4:11; और 1 पतरस 4:11 में मिलती हैं। तौभी रोमियों 12 के कई शब्द ''(जैसे सेवा)'' इतने साधारण हैं कि हम में से कइयों को 6 से 8 आयतों में कम से कम एक वाक्यांश तो मिल सकता है जिसमें वह दान भी शामिल है जो परमेश्वर ने आपको दिया है।

12:6-8 वाले सात दानों पर चर्चा करने से पहले हमें इन दानों की प्रकृति पर विचार करना चाहिए। पहला (''भविष्यवाणी'') एक ''असाधारण'' (आश्चर्यकर्म) का दान था। शेष सम्भवतया ''साधारण'' (आश्चर्यकर्म रहित) श्रेणी में आते हैं।[8] पहली सदी के लेखक आश्चर्यकर्मों के दानों तथा गैर आश्चर्यकर्म रहित दानों में स्पष्ट अन्तर नहीं करते थे क्योंकि सभी दान परमेश्वर की ओर से थे। आर. सी. बेल्ल ने सुझाव दिया है कि परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म के दान शायद उन्हीं लोगों को दिए जिनमें उन क्षेत्रों में स्वाभाविक कुशलता थी। फिर जब सम्पूर्ण वचन मिल गया तो वे आश्चर्यकर्मों के बिना कलीसिया के काम को आगे बढ़ा सकते थे।[9] हम आश्चर्यकर्मों के युग में नहीं रहते, परन्तु हमें आज भी इस बात को समझना चाहिए कि हमारे आश्चर्यकर्म रहित दान ऊपर से ही मिले हैं (याकूब 1:17)। आइए अब संक्षेप में सात दानों को देखते हैं:

(1) *भविष्यवाणी करने का दान।* ''भविष्यवक्ता'' (*prophetes*) का अर्थ ''दूसरे का प्रवक्ता'' (*phemi* से [''कहना''] से पहले *pro* [''पूर्व'']) ।[10] नये नियम के समयों में, भविष्यवक्ता परमेश्वर के लिए प्रेरणा पाए हुए वक्ता होते थे (देखें प्रेरितों 11:27; 13:1; 15:32; 1 कुरिन्थियों 12:28; इफिसियों 2:20; 4:11)। उनके संदेश को ''भविष्यवाणी'' (*propheteia*) कहा जाता था। आज हमारे पास प्रेरणा पाए हुए भविष्यवक्त नहीं हैं, परन्तु परमेश्वर ने अपने संदेश के आवश्यक भाग को नये नियम में संभालकर रखा है।

भविष्यवाणी करने के दान की आज की एक सम्भावित प्रासंगिकता यह है कि कुछ मसीही लोगों को सार्वजनिक तौर पर परमेश्वर का वचन सुनाने का दान मिला है, एक अर्थ में ''परमेश्वर के लिए बोलने'' का दान। (हर किसी में यह योग्यता नहीं है। शरीर के उदाहरण का इस्तेमाल करें तो परमेश्वर ने हर व्यक्ति को मुंह नहीं बनाया)।

(2) *सेवा करने का दान।* पौलुस का अगला शब्द(*diakonia*), से है जिसका अर्थ ''सेवा'' या ''सेवकाई'' है। इससे सम्बन्धित शब्दों में *diakonos* (''सेवक'' या ''मिनिस्ट'') और *diakoneo* (''सेवा करना'')। कई बार इन शब्दों का इस्तेमाल कलीसिया की विशेष सेवकाइयों के लिए किया जाता है, जैसे डीकनों (1 तीमुथियुस 3:10, 13) या प्रचारकों (1 तीमुथियुस 4:6; 2 तीमुथियुस 4:5)। परन्तु ज्यादातर उनका अर्थ एक दूसरे के लिए की गई *किसी भी* सेवा के लिए है (प्रेरितों 19:22; रोमियों 15:25; 2 तीमुथियुस 1:18; फिलेमोन 13; इब्रानियों 6:10)। 1 कुरिन्थियों 12:5 की शब्दावली में से लें तो, ''सेवा की अलग अलग किस्में हैं'' (NIV)। कइयों में यह देखने का कि क्या किया जाना है (*चाहे जो भी* हो) और कैसे किया जाए को देखने का गुण होता है।

(3) *सिखाने का दान।* ''सिखाने वाला'' का अनुवाद *didasko* क्रिया के एक रूप से किया गया है, जिसका अर्थ ''निर्देश देना'' है।[11] कई लोग दूसरों को जानकारी देने में निपुण होते हैं।

(4) *उपदेश देने का दान।* ''उपदेशक'' के लिए शब्द (*parakaleo* से) अर्थ से भरपूर शब्द है। यह एक मिश्रित शब्द है जो *kaleo* (के साथ ''*para* पास में'') को मिलाता है। एक दूसरे को ''पास में बुलाना'' का रूपक सहायता के लिए है।[12] Parakaleo का अनुवाद ''समझाना,'' ''प्रोत्साहित करना,'' ''सलाह देना'' या ''मजबूत करना'' भी हो सकता है। किसी-किसी में प्रोत्साहित करने और प्रेरित करने की खूबी होती है।

(5) *देने का दान।* फिर पौलुस ने ''देने वाले'' की बात की। उसके द्वारा इस्तेमाल किया गया शब्द *metadidomi* (*didomi* [''देना''] से पहले *meta* [''के साथ'']) से लिया गया है इसका अर्थ ''बांटना'' है।[13] NIV में ''दूसरों की आवश्यकताओं के लिए योगदान देना।'' देना को दान के रूप में सोचना थोड़ा अजीब लगता है, परन्तु याद रखें कि हम उसकी बात कर रहे हैं जो परमेश्वर ने हमें करने की योग्यता दी है। यदि आप देने में सक्षम हैं, तो इसका अर्थ यही है कि परमेश्वर ने पहले आपको धन या सम्पत्ति दी है। अधिकतर लेखकों का मानना है कि देने का दान धन बनाने की योग्यता पहले से मान लेता है। कइयों में धन बनाने की खूबी होती है और कइयों में नहीं। धन कमाने में तब तक कोई बुराई नहीं है जब तक हम अधिक महत्वपूर्ण बातों की उपेक्षा न करें और जब तक हम अपने धन का इस्तेमाल स्वार्थी उद्देश्यों के लिए न करें (1 तीमुथियुस 6:9, 10, 17-19 से तुलना करें)।

(6) *अगुआई करने का दान।* ''अगुआई करे'' के लिए यूनानी शब्द *proistemi* से लिया गया है जिसका अर्थ ''के सामने खड़े होना'' है (*histemi* [''खड़े होना''] के पहले *pro* [''पूर्व'']) । *Proistemi* का अनुवाद ''अगुआई,'' ''शासन'' और ''प्रबन्ध'' किया गया है। कइयों में अपने पीछे लगाने के लिए लोगों को प्रेरित करने का स्वाभविक गुण होता है। जहां मैं रहता हूं, वहां इसके लिए इस्तेमाल की जाने वाली अभिव्यक्ति है: ''वह जन्मजात अगुआ है।'' पौलुस के मन में मुख्यतया कलीसिया के ऐल्डर ही होंगे (देखें 1 तीमुथियुस 5:17)। हम किसी आदमी को ऐल्डर के रूप में सेवा करने के लिए अगुआ *बनने* के लिए नहीं चुनते; उसे उस पद में काम करना आरम्भ करने से पहले अगुवे के रूप में पहचान मिलनी चाहिए। परन्तु अगुआई करने के बारे में पौलुस के निर्देश की व्यापक प्रासंगिकता हो सकती है। *Proistemi* का इस्तेमाल अपने परिवार की अगुआई करने के पिता के ढंग के विवरण के लिए भी किया जाता है (1 तीमुथियुस 3:4, 12)।

(7) *दया करने का दान।* ''दया करने'' के लिए शब्द *eleeo* से लिया गया है जिसका अर्थ ''किसी दूसरे ... के साथ सहानुभूति महसूस करना'' और फिर उसे कार्य में व्यक्त करना।[14] यह एक बहुआयामी दान है: यह जानने की समझ कि लोगों को सहायता की आवश्यकता कब है, संक्षेप में यह जानने का दान कि कैसी सहायता सबसे उपयोगी होगी और वह सहायता खामोशी से और बिना गड़बड़ के वह सहायता देना। कुछ दान इस दान से बढ़िया काम करते हैं। तौभी आम तौर पर लोगों में इसे कम पहचान मिलती है।

इस सूची पर नज़र मारें। ध्यान दें कि कुछ दान मुख्यतया *बोलने* (भविष्यवाणी करने, सिखाने, उपदेश करने) के बारे में हैं जबकि शेष मुख्यतया *सेवा करने* (सेवा करना, दान देना, अगुआई करना, दया करना) वाले हैं। सूची में देखते हुए आपको शायद लोगों के बाइबल के उदाहरणों का ध्यान आया होगा। जिन्हें स्पष्टतया अलग-अलग दान मिले थे और शायद वे लोग, जिन्हें आप व्यक्तिगत रूप से जानते हैं कि उन में ये योग्यताएं हैं।[15] दानों पर अध्ययन करते हुए जो लोग मेरे ध्यान में आए उनमें से कुछ ये हैं:

- भविष्यवाणी करने का दान-अगबुस (प्रेरितों 11:28; 21:10, 11)।
- दान देने का दान-स्त्रियां जो यीशु तथा प्रेरितों की सहायता करती थीं (लूका 8:1-3)।
- उपदेश देने का दान-बरनाबास, ''शांति का पुत्र'' (प्रेरितों 4:36)।
- सेवा का दान-फिबी, जो कालांतर में आमतौर पर पौलुस की सहायता करती थी (रोमियों 16:1, 2)।
- दया करने का दान-दोरकास, जो विधवाओं के लिए वस्त्र बनाती थी (प्रेरितों 9:36, 39)।

जहां तक मुझे मालूम है, अकेले यीशु के पास ये सातों दान थे। हम में से अधिकतर लोगों के पास केवल एक या कुछ दान हैं (मत्ती 25:15 से तुलना करें)।

एक चुनौती

दानों की सूची देते हुए, क्या आपने कहा कि ''शायद मुझे परमेश्वर ने यह दान दिया है''?

कलीसिया के हर सदस्य के लिए यह तय करने से कि उसका तोड़ा कौन सा है और उसे कैसे इस्तेमाल करना है से महत्वपूर्ण कुछ बातें हैं। क्या आप किसी ऐसी मण्डली की कल्पना कर सकते हैं जिसमें *हर* सदस्य वह करने में व्यस्त है जो वह कर सकता या सकती है? भलाई के लिए वह मण्डली कितना बड़ा बल हो सकती है!

अब तक कुछ लोग पूछ रहे हैं, ''मुझे कैसे *पता* चल सकता है कि परमेश्वर ने मुझे कौन सा दान दिया है?'' कई सुझाव दिए गए हैं। जेम्स बेयर्ड ने एक सम्भावित ढंग की रूपरेखा दी है:[16]

- उन बातों को लिख लें जो आप कर *सकते* हैं, करना अच्छा लगता है और करने में आनन्द आता है।
- मण्डली में जो कुछ *किया जाना आवश्यक है* उसे लिख लें: आराधना सेवाओं में, सेवा के कार्यों में, आगे की आवश्यकताओं के लिए, साथी सदस्यों के लिए जिन्हें आवश्यकता है, आदि।
- इन दोनों सूचियों की तुलना करें। यह देखने की कोशिश करें कि आपके तोड़े और योग्यताएं कहां उपयुक्त हैं। परन्तु जो कुछ आप इस समय कर सकते हैं अपने आपको वहीं तक सीमित न करें। अपने आप से पूछें, ''मैं कौन से गुणों को *बढ़ा* सकता हूं?''
- अगुआई के लिए प्रार्थना करें। (यह हर कदम के साथ जाता है।)
- अन्य लोगों जैसे ऐल्डरों, डीकनों, प्रचारकों और अन्य परिपक्व मसीही लोगों की सलाह मांगें।
- विचार के लिए समय दें।
- अन्त में जो कुछ आप कर सकते हैं वह करने का निर्णय लें। अपने आपको इस में दे दें और इसे *करना* आरम्भ करें।

यहां सावधानी बरतने की आवश्यकता है। मैं किसी के निर्णय लेने की कल्पना कर सकता हूं, ''मुझे सिखाने का काम मिला है सो मुझे तैयार करने की आश्यकता नहीं है'' या ''मुझे उपदेश देने का दान मिला है, सो मुझे देने की आवश्यकता नहीं है।'' बाइबल हम में से *हर एक* को किसी न किसी हद तक इन सातों दानों में शामिल होने की आज्ञा देती है:

- सुसमाचार सुनाना, परमेश्वर के ''प्रवक्ता'' बनना है (मत्ती 28:19, 20; मरकुस 16:15, 16)।
- सेवा करना (गलातियों 5:13; रोमियों 12:11)।
- सिखाना (इब्रानियों 5:12)।
- उपदेश करना (इब्रानियों 3:13; 10:24, 25)।
- देना (लूका 6:38; रोमियों 12:13; 1 कुरिन्थियों 16:1, 2; 2 कुरिन्थियों 8; 9)।
- अगुआई करना (1 तीमुथियुस 3:4, 12)। मण्डली की अगुआई [ऐल्डरशिप] पुरुषों के लिए सीमित है।
- दया करना (लूका 19:37; कुलुस्सियों 3:12)।

अपने दानों को जानना यह निर्णय लेने जितना बड़ा नहीं है कि मसीही होने के नाते हमें क्या करना चाहिए क्योंकि बाइबल इस पर सामान्य निर्देश देती है। इसके बजाय हमारी मसीही सेवा में *ज़ोर* दिया जाने को तय करना है। जब मैं कॉलेज में गया था तो मुझे ग्रेजुएट होने के लिए, अंग्रेज़ी, इतिहास व साइंस सहित कई विषयों को पढ़ना पड़ा था। परन्तु मेरा अधिकतर समय बाइबल तथा बाइबल से सम्बन्धित विषयों का अध्ययन करने में बीतता था। कॉलेज में इस्तेमाल होने वाला शब्द था कि ''बाइबल'' मेरा ''मुख्य'' था। इसे अपने विषय पर लागू करें तो हमारे दानों से यह तय होना चाहिए कि हमारा आत्मिक ''मुख्यतया'' क्या है।

परमेश्वर ने दान दिए हैं और वह हम से उन्हें इस्तेमाल करने की उम्मीद करता है। अपने दानों को जानना और उन्हें इस्तेमाल करने के दूरगामी परिणाम होंगे। यह आपको एक मसीह के रूप में आनन्दित बनाएगा। (अपने मन में मैं उन लोगों के मुस्कुराते चेहरे देख सकता हूं जिन्होंने मुझे बताया है, ''अन्त में मुझे कलीसिया में अपनी जगह मिल गई है!'') यह आपको प्रभु का विश्वासयोग्य बनाए रखेगा। यह कलीयिसा को बनाएगा (देखें इफिसियों 4:12)। यह दूसरों के जीवन का आशीषित करेगा और इससे परमेश्वर की महिमा होगी (1 पतरस 4:11)।

... फिर इसका इसका इस्तेमाल करें (12:3-8)

इसका इस्तेमाल क्यों किया जाना चाहिए?

इस पूरे पाठ में मैंने कहा है कि परमेश्वर ने हमें दान *इस्तेमाल* के लिए दिए हैं। आयत 6 में हम पढ़ते हैं, ''हमें बरदान मिले हैं, ... तो जिस को जो दान मिला हो, वह विश्वास के परिणाम के अनुसार'' उसका इस्तेमाल करे (आयत 6क, ख)। NASB वाली मेरी प्रति में, ''जिस को जो दान मिला हो, वह विश्वास के परिणाम के अनुसार'' इटैलिक में है जो यह संकेत देता है कि इन शब्दों को अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया था। उन्होंने उस लम्बे वाक्यांश को क्यों जोड़ा? क्योंकि हमारे दानों को *इस्तेमाल* करने की आवश्यकता पूरे वचन पाठ में मिलती है। यह मत भूलें कि हमें दान देने वाला *परमेश्वर* है (आयतें 3, 6)। यदि आपने किसी को इस्तेमाल करने के लिए कुछ उपहार दिया परन्तु आज उसे कभी इसका इस्तेमाल करते हुए न देखें तो आपको कैसा लगेगा?

फिर, यह न भूलें कि हम देह के ''अंग'' (आयतें 4, 5) हैं जिसमें कोई तो ''आंखें'' है, कोई ''कान,'' कोई ''हाथ'' और कोई ''पांव'' और कोई और अंग है। यदि आंख देखना बंद कर दे तो इसने अपने उद्देश्य को पूरा नहीं किया; यदि कान सुनना बंद कर दें, तो इसने अपने उद्देश्य को पूरा नहीं किया। इसके अलावा हमारे वचन पाठ की अन्तिम तीन आयतों में दिया गया ज़ोर यह है कि जिनके पास विभिन्न दान हैं उन्हें उनका *इस्तेमाल* करना आवश्यक है।

इसका इस्तेमाल कैसे हो सकता है?

हमारे दान केवल इस्तेमाल के लिए नहीं हैं; उनका विशेष ढंग से अभ्यास होना आवश्यक है। पौलुस ने कुछ दानों के इस्तेमाल के सम्बन्ध में टिप्पणियां जोड़ी हैं (इस पाठ में ऊपर दी गई सूची में 1, 5, 6 और 7 नम्बर)।

(1) *भविष्यवाणी करने का दान।* पौलुस ने कहा, ''जिसको भविष्यवाणी का दान मिला हो वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यवाणी करे'' (आयत 6)। ''परिमाण'' *analogia*

(*logos* [''वचन''] के पहले *ana* [''ऊपर'' या ''ऊपर को'']) का अनुवाद है, जिससे हमें अंग्रेज़ी का शब्द ''analogy'' मिला है। *Analogia* का अर्थ है ''एकरूपता, अनुपात, आयाम।''[17] ''वह विश्वास'' मूलतया ''विश्वास'' आयत 3 के हवाले से अर्थात परमेश्वर द्वारा हर मसीही को दिए गए ''विश्वास के परिणाम'' से है। डब्ल्यू. ई. वाईन ने लिखा है कि ''यह जो पवरमेश्वर ने दिया है उससे आगे जाने के विरुद्ध चेतावनी है।''[18] भविष्यवक्ता के लिए वही संदेश बोलना आवश्यक था जो परमेश्वर ने उसे दिया होता था। ''यदि कोई बोले तो ऐसा बोले कि मानों परमेश्वर का वचन है'' (1 पतरस 4:11क)।[19]

(5) *देने का दान।* पौलुस ने कहा, ''दान देनेवाला उदारता से दे'' (आयत 8ख)। ''उदारता'' (*haplotes*) के लिए शब्द *haplous* से लिया गया है जिसका अर्थ ''अकेला'' है। *Haplotes* ''मन के अकेलेपन'' का संकेत देता है जिसका परिणाम उदारता हो सकता है।[20] KJV में इस शब्द के मूल अर्थ को उभारा गया है: ''जो देता है, वह इसे सादगी से दे।'' मुझे यह अच्छा लगता है। जब आप दान दें तो इसका ढिंढोरा न पीटें (मत्ती 6:2 से तुलना करें)। NASB में अन्तिम परिणाम पर ज़ोर दिया गया है: ''उदारता से।'' CJB में दोनों अवधारणाओं को शामिल किया गया है: ''इसे सादगी से और उदारता से करें।''

(6) *अगुआई करने का दान।* पौलुस ने लिखा, ''जो अगुआई करे, वह उत्साह से करे'' (आयत 8ग)। ''उत्साह'' के लिए यूनानी शब्द *spoude* से है जिसका अर्थ ''गम्भीरता, जोश'' है।[21] समय बीतने पर अगुआ थक सकता है और अपने कर्त्तव्य पूरे करने में लापरवाह हो सकता है। हम ऐल्डरों के मण्डली की अगुआई करने या पिताओं के अपने परिवारों की अगुआई करने की बात कर रहे हैं, उन्हें ''जिम्मेदारी गम्भीरता से लेनी'' आवश्यक है (NLT)।

(7) *दया करने का दान।* अन्त में पौलुस ने कहा, ''जो दया करे, वह हर्ष से करे'' (आयत 8घ)। ''हर्ष'' *hilarotes* से लिया गया है जिससे हमें अंग्रेज़ी शब्द ''hilarity'' (प्रसन्नता) और ''hilarious'' (प्रसन्न) शब्द मिले हैं। *Hilarotes* का अर्थ ''मन की वह तैयारी, वह आनन्द है जो कुछ भी करने को प्रेरित करता है।''[22] अनइच्छा से या माथे पर त्योरियां चढ़ाकर किसी की सहायता करना भलाई करने से अधिक हानिकारक हो सकता है। पीटरसन के अनुवाद में पौलुस के निर्देशों को इस प्रकार से अनुवाद किया गया है: ''यदि आप सुविधाहीन लोगों के साथ काम करते हैं तो उनके साथ चिड़ें या उनसे निराश न हों। अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखें'' (MSG)। डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को ने लिखा है, ''जिन्हें विशेषकर दया करने की योग्यता मिली है उनमें'' उनके सुन्दर दान के प्रसिद्ध होने पर बड़ी मांग से आपने समय और ऊर्जा देने के लिए चिड़चिड़े नहीं होना चाहिए।[23]

पौलुस ने प्रत्येक दान का इस्तेमाल करने के ढंगों का विवरण देने के लिए समय नहीं दिया। बल्कि उसने *व्यवहारों* की किस्म पर ध्यान दिया जो अपनी योग्यताओं का अभ्यास करते समय हमारे होने आवश्यक हैं। चार दानों के बारे में पौलुस के निर्देशों में किसी भी दान के इस्तेमाल के लिए अच्छी सलाह है:

- आपका दान जो भी हो, परमेश्वर के वचन में बने रहें और इसके द्वारा लगाई गई सीमाओं को स्वीकार करें।

- अपने दान को दिखाने या लोगों से प्रशंसा पाने के लिए इस्तेमाल न करें।
- अपने दान का इस्तेमाल जोश से करें।
- अपने दान के लिए प्रसन्न हों और इसका इस्तेमाल आनन्द से करें।

मुझे परमेश्वर द्वारा हमें दिए गए अलग-अलग दानों पर एक अन्तिम बात कहनी है। यह तथ्य कि लोगों को अलग-अलग दान मिले हैं कई बार मण्डली में योजना बनाने की गतिविधियों पर असहमति हो जाती है। जिन्हें सिखाने का दान मिला है उन्हें लग सकता है कि शिक्षा का कार्यक्रम सबसे महत्वपूर्ण है; जिन्हें दया करने का दान मिला है उसका मानना यह हो सकता है कि कलीसिया को सबसे अधिक दूसरों की सहायता करने पर ज़ोर देना चाहिए। याद रखें कि सब को एक जैसा दान नहीं मिला है और यह कि हर दान महत्वपूर्ण है। फिर हम में से हर कोई जो भी कर सकता है वह करते हुए मिल-जुलकर प्रेम से इकट्ठे रहना सीखें।

सारांश

मैंने इस पाठ का आरम्भ यह पूछने से किया था, ''किसी को कौन सी बात विशेष बनाती है?'' संसार में धनवान, शक्तिशाली, या गुणी होना लोगों को विशेष बनाता है। परन्तु एक ऐसी जगह है जहां आपकी खूबी आपकी सम्पत्ति, आपकी स्थिति या आपके गुण पर निर्भर नहीं है। वह जगह कलीसिया, अर्थात मसीह की देह है, जिसमें हर सदस्य की आवश्यकता है और हर व्यक्ति महत्वपूर्ण है।[24] यदि आप अभी तक मसीह की देह के अंग नहीं हैं, तो मैं आपको यीशु में विश्वास करके और उस पर भरोसा रखकर बपतिस्मा लेने के लिए प्रोत्साहित करता हूं, ताकि परमेश्वर आपको अपनी कलीसिया में मिला ले (देखें प्रेरितों 2:38, 47; KJV; 1 कुरिन्थियों 12:13)। फिर आप परमेश्वर द्वारा दिए गए दान को जाने और प्रभु की महिमा के लिए उसका इस्तेमाल करें जो आपसे प्रेम करता है। यहां पृथ्वी पर प्रसन्न रहने और अनन्तकाल तक स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहने का यही ढंग है।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस पाठ का एक वैकल्पिक शीर्षक ''कलीसिया में अपनी जगह तलाशना'' हो सकता है। इस पाठ की लगभग हर बात के लिए मुझे एक अलग अध्ययन लिखने का लालच आया था। वचन से इतनी व्यवहारिक प्रासंगिकताएं बनाई जा सकती हैं! मैंने इनमें से कुछ का संकेत दिया है। आपके सुनने वालों को जिनकी सबसे अधिक आवश्यकता है उन्हें चुनकर जहां आप प्रचार करते या सिखाते हैं वहां की परिस्थिति से मिलाने के लिए मेरे विचारों को विस्तार दें।

''सेवा के लिए पवित्र लोगों को सिद्ध करने'' से भी आवश्यक कई काम (इफिसियों 4:12)। इस पाठ की एक व्यवहारिक प्रासंगिकता के रूपा में मण्डली के अगुवे अपने दान को जानने और फिर उसे इस्तेमाल करने के लिए प्रत्येक सदस्य की सहायता करने में समय दें।

टिप्पणियां

[1]जहां आप रहते हैं वहां के समाज के अनुकूल इस सूची को बना लें। [2]जो बरनेट, ''यू आर सम वन स्पैशल'' (ट्रैक्ट) (पृष्ठ नहीं, तिथि नहीं), 6. [3]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्पोजिस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 583. [4]सी. जी. विल्के एण्ड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अनु. व संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एण्ड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रेपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 408. [5]''कार्य'' की जगह KJV ''कार्यालय'' है जिसका आज वर्षों पुराने शब्द से अर्थ है। NKJV में ''कार्य'' है। [6]रोमियों 12 में दिए गए संकेतों के सम्बन्ध में 1 कुरिन्थियों 12 के कई प्रवचन दिए जा सकते हैं। [7]अपने सुनने वालों के सामने खड़े होने पर, आप पाठ के इस भाग के लिए ''विज़ुअल एड'' बन जाते हैं। आप अपने शरीर के अलग-अलग भागों की ओर ध्यान दिला सकते हैं। [8]अधिकतर लेखक इस बात से सहमत हैं कि सूची में आश्चर्यकर्म के दान और आश्चर्यकर्म बिना दान दोनों शामिल हैं, परन्तु इस भाग पर अलग-अलग विचार हैं कि कौन से दान आश्चर्यकर्म वाले हैं और कौन से आश्चर्यकर्म रहित। [9]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 136. [10]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन* (लंदन: सेमुअल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 354.

[11]वाइन, 619. [12]अनुवादित शब्द ''मैं विनती करता हूं'' (*parakaleo*) पर चर्चा ''बदला हुआ जीवन (12:1, 2)'' पाठ में की गई है। [13]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन,* 265. [14]वाइन, 404. [15]यहां अपने उदाहरणों का इस्तेमाल करें। आपको चाहिए कि स्थानीय मसीही लोगों का नाम शामिल करें जिन्हें इन दानों में से कुछ दान मिले हैं (या थे)। [16]जेम्स ओ. बेअर्ड, ''गोईंग टू हेवन फ़ॉर्म द पियु,'' मैक्वायर चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, सिडनी, जुलाई, 1976 को दिया गया प्रवचन। [17]*दि एनेलिटकल ग्रीक लैक्सिकन,* 23. [18]वाइन, 494. [19]रोमियों 12:6ग के सम्बन्ध में, जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने सुझाव दिया है कि ''हमें 'विश्वास के परिमाण के अनुसार' वाक्यांश का अनुवाद करना चाहिए। यानी 'भविष्यवक्ता यह सुनिश्चित करें कि उसका संदेश किसी प्रकार से मसीही विश्वास से विपरीत नहीं है' '' (जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर दि वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ [डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994], 327)। [20]ज्योफ़्री ब्रोमिले, *थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ़ दि न्यू टैस्टामेंट,* संपा. ग्रेहर्ड किट्टल एण्ड ग्रेहर्ड फ्रेडरिच, अनु. ज्योफ़्री ब्रोमिले, abr. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 65 ओ. बोरनफिंड, *''haplótēs.''* [21]वाइन, 169. [22]वही, 98. [23]डी. स्टुअर्ट ब्रिस्को, *मास्टरिंग द न्यू टैस्टामेंट: रोमन्स,* दि कम्युनिकेटर'स कमैंट्री सीरीज़ (डलास: वर्ड पब्लिशिंग, 1982), 222. [24]बरनेट, 9-10.